संवाद-पत्र

प्रथम अंक जुलाई 2021 से फरवरी 2022

हिंदी विभाग

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय,
शैक्षणिक खंड, धौलाधार परिसर-एक,

धर्मशाला, जिला - काँगड़ा, (हि.प्र.) 176215

कुलपति की कलम से ....

प्रो. (डॉ.) सत प्रकाश बंसल
कुलपति

मुझे हिंदी विभाग के बारे में बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि यह विभाग प्रारम्भ से ही शिक्षण एवं शोध को लेकर सक्रिय रहा है। साहित्य की समझ एवं विषयगत अंतर्दृष्टि विकसित करने के साथ यह विभाग नितांत ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में अध्ययन एवं सीखने की प्रवृत्ति का विकास करता आया है। वर्तमान समय में इस विभाग के कई पूर्व शिक्षार्थी अध्यापन के अतिरिक्त पत्रकारिता आदि में अपनी विशेष सेवाएँ दे रहे हैं जो विभाग के लिए अत्यंत गौरव का विषय है। प्राथमिक विद्यालयों से लेकर उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों की शिक्षक के तौर पर भागीदारी इस विभाग के शिक्षकों के सम्यक मार्गदर्शन एवं अभिप्रेरणा का प्रतिफल है। बात यदि वर्तमान में चल रहे स्नातकोत्तर कार्यक्रम की करें तो विद्यार्थियों की कुल संख्या 46 है वहीं शोधार्थियों की कुल संख्या 22 है। इस वर्ष विभाग के कई विद्यार्थियों और शोधार्थियों का चयन विभिन्न सेवाओं के लिए हुआ है जो विभाग की अकादमिक सफलता में नए अध्याय जोड़ता है। विभाग के शिक्षक डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पर्यवेक्षक नामित किया गया, यह विभाग की उल्लेखनीय उपलब्धि है।

2010 में स्थापित हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय वर्तमान में अपने तेरहवें वर्ष में है। जुलाई, 2021 में विश्वविद्यालय के नए कुलपति के रूप में मेरे पदभार ग्रहण करने के पश्चात् विश्वविद्यालय के स्थायी परिसरों के निर्माण कार्य की दिशा में आगे बढ़ने के साथ विश्वविद्यालय द्वारा सक्रिय प्रयासों को गति प्रदान की गई है, ताकि वैधानिक और कानूनी औपचारिकताओं के पूर्ण होने के बाद वास्तविक निर्माण कार्य जल्द से जल्द शुरू हो सके।

विश्वविद्यालय ने बारह अलग-अलग स्कूलों में उनतीस शिक्षण विभागों / केंद्रों को सक्रिय किया है। विश्वविद्यालय में तीन पीठ भी कार्यरत हैं। विभिन्न पाठ्यक्रमों यथा स्नातक, स्नातकोत्तर (पी.जी.), एम.फिल. अनुसन्धान डिग्री (आरडी) कार्यक्रम में लगभग 2000 से अधिक छात्र-छात्राएँ नामांकित हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में दो बी. वोक कोर्स, 6 पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम और चार सर्टिफिकेट कार्यक्रम भी चलाएँ जा रहे हैं।

विश्वविद्यालय भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी) 2020 के क्षेत्र में अग्रदूत है। विश्वविद्यालय ने कई कार्यशालाओं और बैठकों के मंथन सत्रों के बाद इसके कार्यान्वयन के लिए दिशा-निर्देश तैयार तथा प्रकाशित किए हैं। शैक्षणिक संरचना को तदानुसार संशोधित और पुनर्गठित किया गया है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि आज विश्वविद्यालय में आधे से अधिक प्रावधानों को लागू किया जा चुका है।

विश्वविद्यालय के त्वरित विकास में योगदान हेतु मैं अधिष्ठाता छात्र कल्याण, कुलसचिव, विभागाध्यक्ष, कुलानुशासक, परीक्षा नियंत्रक, सभी अधिष्ठातागण, केंद्र निर्देशकों, वित्तअधिकारी, हिंदी विभाग के शिक्षकों तथा विश्वविद्यालय के अन्य अधिकारियों को उनके अथक प्रयासों हेतु विशेष धन्यवाद देता हूँ।

प्रो. सत प्रकाश बंसल
कुलपति
हि.प्र.कें.वि.वि., धर्मशाला
दिनांक : 15 मार्च, 2022

संपादकीय

संपादक
डॉ. ओम प्रकाश प्रजापति

भूमंडलीकरण के दौर में आपसी विनिमय (मेलजोल) से भाषा विकसित होती है। भाषा के इस विकास में यह आवश्यक हो जाता है कि भाषा के इन विकल्पों का चयन करने के लिए भाषा नियोजन की प्रक्रिया प्रारंभ हो। इस प्रक्रिया में यह आवश्यक है कि ऐसी भाषा का चयन हो जो भूमंडलीकरण के अनुरूप लक्ष्य की प्राप्ति में सक्षम हो। वास्तव में प्रयोजन के बिना नियोजन प्रायः सफल नहीं होता है। इसलिए एक ऐसी रूपरेखा तैयार की जाती है जिससे भाषा सुनियोजित एवं सतत बनी रहे। इस भाषा नियोजन में भाषाई स्वरूप का विशेष ध्यान दिया जाता है। भाषिक भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में नीति निर्धारण अहम है। इसके साथ-साथ उसके मानकीकरण व आधुनिकीकरण पर भी विचार किया जाता है। आंग्ल-भाषा का चयन बहुत पहले हो चुका है और इसका मानकीकरण व आधुनिकीकरण भी होता रहता है। इधर ब्रिटिश इंग्लिश और अमेरिकी इंग्लिश में एक विवाद छिड़ गया है कि इन दोनों में कौन-सा मानक रूप है। जबकि अमेरिका की भूमिका अधिक होने के कारण अमेरिकी इंग्लिश का वर्चस्व एवं सम्वर्द्धन अधिक है। यदि बात भारतीय भाषाओं के सन्दर्भ में करें तो हिंदी भाषा का चयन राजभाषा के रूप में हो चुका है। वर्तमान में इसका प्रयोग अनेक क्षेत्रों में हो रहा है। समय-समय पर इसका मानकीकरण व आधुनिकीकरण भी होता रहता है। अब हिंदी भाषा भी भूमंडलीकरण के अनुरूप अपना स्थान बनाने में सक्षम है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जहाँ अंग्रेजी का वर्चस्व दिखाई देता है तो वहीं हिंदी भाषा ने भी अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। वर्तमान में हिंदी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक आदि के साथ-साथ सतत अपने कदम आगे बढ़ा रही है।

इस दृष्टि से भाषा का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है। इसमें छोटी-छोटी भाषाएँ लुप्त होने के कगार पर हैं। वही भाषा आगे बढ़ सकती है जिसे बोलने वाले सर्वाधिक हों और वह अपने स्वभाव से सर्वग्राही हो। अंग्रेजी व चीनी के साथ-साथ हिंदी भी एक भाषा है जो जन आशाओं के द्वारा सतत अपनी सफल भूमिका का निर्वहन कर रही है। यह उल्लेखनीय है कि हिंदी की इस शक्ति को समझने में बाजारवादी विशेषज्ञों को कोई कठिनाई नहीं हुई उनके निशाने पर हर देश का उपभोक्ता है। इस समाज से जुड़ने के लिए अनुवाद जैसा कारगर अस्त्र आज कहीं नहीं मिलता है। इसलिए भाषिक भूमंडलीकरण में अनुवाद का विवेचन करना आवश्यक हो जाता है जो बाजारवाद की अपेक्षाओं के अनुरूप महत्वपूर्ण और प्रभावकारी भूमिका निभा सकता है।

इन दिनों भाषा एवं अनुवाद सम्बन्धी सेवाओं की माँग काफी बढ़ी है। अनुवाद की जरूरत केवल साहित्य तथा अंतःसंस्कृति कार्यकलापों के संवर्द्धन के लिए नहीं है बल्कि यह प्रौद्योगिकी एवं स्थानिकीकरण की प्रक्रिया के अभिन्न अंग बन चुके भूमंडलीकरण के परिदृश्य में कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए भी एक अत्यावश्यक है।

हमारी भावी पीढ़ी के लिए स्थानीय कला, शिल्प और साहित्य के साथ विज्ञान का समग्र विश्लेषण और शैक्षणिक अभिलेखीकरण व्यापक रूप में संभव होगा ऐसी आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है।

संपादक
डॉ. ओम प्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सफल क्रियान्वयन के लिए परिवर्तन आवश्यक - मुकुल कानिटकर

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की ओर से एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन धौलाधार परिसर1- के सभागार में हुआ। जिसका विषय "राष्ट्रीय शिक्षा नीति क्रियान्वयन में शोध एवं भारतीय ज्ञान परंपरा का योगदान" था। इस संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री मुकुल कानिटकर जी (अखिल भारतीय संगठन मंत्री, भारतीय शिक्षण मंडल, नागपुर) की गरिमायी उपस्थिति रही। वहीं विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल जी ने इस संगोष्ठी की अध्यक्षता की। इस संगोष्ठी के संयोजक एवं नोडल अधिकारी डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति ने कहा कि हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय देश का एक मात्र विश्वविद्यालय है जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 का 50 प्रतिशत भाग लागू कर चुका है।

विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल जी ने श्री मुकुल कानिटकर के मुक्तकारी, युक्त कारी और अर्थकारी शिक्षा के विचार को उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में अब (30) प्रैक्टिकल तथा (70) थ्योरी की जगह अब 50-50 के अनुपात में थ्योरी और प्रैक्टिकल वाले पाठ्यक्रम प्रारंभ किए जायेंगे। नई शिक्षा नीति के बदलावों में स्किल एंड वोकेशनल शिक्षा, मल्टिपल एंट्री एंड मल्टिपल एक्ज़िट सिस्टम एवं इंडियन नॉलेज सिस्टिम पर विशेष बल दिया गया है। रिफार्म, परफॉर्म एवं ट्रांस्फार्म की नीति पर चलते हुए विश्वविद्यालय में विज्ञान विषयों सहित सभी कोर्स द्विभाषी शुरू किए जाएँगे, जिससे ग्रामीण परिवेश के छात्रों को लाभ होगा।

वहीं इस मौके पर रिसर्च फॉर रिसर्जन्स फाउंडेशन, नागपुर के सदस्य श्री पंकज नाफड़े ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सबसे बड़ी बात यह है कि इसमें भारत केंद्रित शिक्षा का प्रावधान है। विद्यार्थी नौकरी करने के स्थान पर नौकरी देने की स्थिति में आएगा। विद्यार्थियों का जीवन केवल सफल नहीं बल्कि सार्थक हो, यह हमारी नई शिक्षा नीति का लक्ष्य है।

इस संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि भारतीय शिक्षण मंडल हिमाचल प्रांत के अध्यक्ष प्रो. कुलभूषण चंदेल ने भारतीय शिक्षण मंडल, नागपुर के क्रियाकलापों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता भारतीय शिक्षण मंडल, नागपुर के अखिल भारतीय संगठन मंत्री मुकुल कानिटकर ने साहना सिंह की पुस्तक का उल्लेख करते हुए कहा कि नालंदा विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए परीक्षा होती थी। भारत ज्ञान भूमि तब बनेगा जब यह तपोभूमि बनेगा। जीवन में किसी भी लक्ष्य् में सफलता के लिए तप ही एकमात्र रास्ता है। बिना तप के कुछ भी पाना संभव नहीं है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार अगर व्यंक्ति में रत्ती भर भी निस्वार्थ काम करने का भाव आ जाए तो उसमें अथाह कार्य करने की शक्ति आ जाती है। तप या शोध गलत तब होता है जब उसमें स्वार्थ आ जाता है। आरएफआएफ परमार्थ का अनुरसरण करते हुए तपस्वियों की तरह काम करता है। जब तक बुद्धि का परिशोधन न हो तब तक यह एकत्व् की जगह भेद को ही देखती है। हमारे यहाँ आदर्श शासन युक्त शिक्षा है। आज शासन के सामने कुलगुरु को झुकना पड़ता है। जब तक विद्वान, शिक्षक, गुरु शासन के ऊपर नहीं पहुँच जाते तब तक राष्ट्रीय शिक्षा नीति को सफल नहीं कहा जा सकता। गुरु की खोई प्रतिष्ठा, को महिमामंडित करना ही भारतीय शिक्षण मंडल का मूल ध्येय है। मुक्त विद्या का लक्ष्य तब साकार होगा जब शिक्षक सबका वंदनीय होगा। शिक्षक की खोई हुई प्रतिष्ठा को केवल शिक्षक ही दे सकता है। स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि एक गुणा पुण्य से मनुष्य योनि में जन्म मिलता है तथा जब पुण्य दो गुणा होता है तब भारत में जन्म मिलता है। जब पुण्य तीन गुणा हो जाता है तब शिक्षक बनता है। शिक्षक अच्छा या बुरा नहीं होता, शिक्षक शिक्षक होता है। हमें प्रत्येक शिक्षक का केवल इसी बात पर सम्मान करना चाहिए कि वह तीन गुणा पुण्य से शिक्षक बना है। जिस दिन यह हो जाएगा उस दिन भारतीय ज्ञान परंपरा कभी न समाप्त होने वाली परंपरा हो जाएगी। सर्वे भवन्तु सुखिनः कहने वाली हमारी एकमात्र संस्कृति है। शिक्षक होने के नाते हम ऐसी परंपरा के ध्वजवाहक हैं। कार्यक्रम के अंत में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. विशाल सूद जी ने सभी गणमान्य अतिथियों एवं श्रोताओं का आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया। इस कार्यक्रम में हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. नण्डूरी राज गोपाल जी ने मंच संचालन की सम्यक भूमिका का निर्वहन किया।

प्रतिभा अवसर को सृजित करती है - डॉ. प्रजापति

यदि हम परिश्रम को अपने आचरण में उतार लें तो हर लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति प्रतिभाशाली है और प्रतिभा अवसरों का सृजन करती है - डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय में बतौर सहायक प्राध्यापक हिंदी के पद पर कार्यरत हैं। वर्तमान में अनुवाद के तकनीकी कौशल को विकसित करने और भाषा को रोजगार मूलक उपादनों से जोड़ने के लिए अनुसंधान कार्य कर रहे हैं। उल्लेखनीय है 'सवाई माधोपुर' के एक छोटे से गाँव ऐचेर से ही अपनी प्राथमिक शिक्षा

पूरी करने वाले डॉ. ओमप्रकाश की गिनती आज भारत के स्थापित भाषाविदों में होती है। वर्धा हिंदी विश्वविद्यालय से भाषा एवं अनुवाद में पी-एच.डी की उपाधि प्राप्त करने के बाद डॉ. ओमप्रकाश ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। हाल ही में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा पश्चिम बंगाल पात्रता परीक्षा (SET) में डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति को ऑब्जर्वर नियुक्त किया गया है।

हिंदी विभाग में अतिथि व्याख्यान संपन्न

दिनाँक 23 जनवरी, 2022 दिन रविवार को हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस सप्ताह के अवसर पर हिंदी विभाग द्वारा 'उच्च शिक्षा और मूल्य' विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ, इग्नू के आचार्य जगदीश शर्मा जी ने विशेष व्याख्यान दिया। ऑनलाइन माध्यम द्वारा आयोजित इस अतिथि व्याख्यान में मंच संचालन का कार्य हिंदी विभाग की सहायक आचार्या डॉ. प्रिया शर्मा ने किया। इसके पश्चात हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ॰ नंडूरी राजगोपाल जी ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति महोदय जी के सचिव, पर्यावरण विज्ञान के प्रोफेसर ए.के. महाजन जी ने किया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रोफेसर जगदीश शर्मा जी का स्वागत हिंदी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. चंद्रकांत सिंह जी ने किया। प्रो॰ जगदीश शर्मा जी ने उच्च शिक्षा और मूल्य विषय पर अपनी बात बहुत ही संक्षिप्त और सूत्र रूप में कही। उन्होंने मूल्य की महत्ता और गरिमा को परिभाषित किया। उन्होंने बताया कि मूल्यवान व्यक्ति न केवल अपने चरित्र और जीवन को बेहतर बनाता है अपितु समाज और देश के उत्थान तथा उसकी प्रगतिशीलता में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तत्पश्चात मूल्य पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि मूल्य एक जीवन पद्धति है जो न केवल शिक्षा के उच्च स्तरों से जुड़ी है बल्कि जीवन की दैनिकचर्या से उसका गहरा सरोकार है। जीवन का ऐसा कोई पक्ष नहीं जो मूल्य से अछूता रहा हो। उन्होंने विश्व ग्राम के द्वारा स्पष्ट किया कि नैतिक मूल्य ही हमें सह अस्तित्व की ओर प्रेरित करते हैं। उन्होंने नैतिकता एवं मूल्य को उच्च शिक्षा के विकास के लिए आवश्यक बताया। प्रोफेसर जगदीश शर्मा जी ने इस बात पर बल दिया कि वर्तमान समय में शोध अध्येता अपने शोध में नैतिकता और मूल्यों का प्रयोग करके समाज का बेहतर निर्माण कर सकते हैं। कार्यक्रम समापन के अवसर पर सभी का आभार ज्ञापन सहायक आचार्य डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति जी ने किया। इस कार्यक्रम में सहायक प्रध्यापक प्रीति सिंह और विभाग के शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने सहभागिता की।

हिंदी विभाग द्वारा पूर्व छात्र-परिषद का गठन

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा पूर्व छात्र बैठक (alumni meet) का आयोजन दिनाँक 13 फरवरी 2022 को पूर्वाह्न 11 बजे आभासी (virtual) माध्यम से किया गया। इस आयोजन में वर्ष 2012 से लेकर 2019 तक के सभी शोधार्थी और स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों ने सहभागिता की। इस आयोजन की अध्यक्षता एवं स्वागत-वक्तव्य हिंदी विभाग के अध्यक्ष आदरणीय डॉ. नंडूरी राज गोपाल जी ने दिया। उन्होंने अपने वक्तव्य में इस आयोजन के कई महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा करते हुए अपने छात्र जीवन से सम्बन्धित कई संस्मरण भी साझा किए। उन्होंने 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' के संदर्भ में कहा कि बहुत से विश्वविद्यालय पूर्व छात्र परिषद का गठन किए हैं। उसी क्रम में हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग का भी यह अनूठा प्रयास है। उन्होंने यह भी आग्रह किया कि सभी पूर्व छात्र लगातार मिलते रहेंगे तथा पुरानी स्मृतियों को तरो-ताजा करने के लिए आप सभी हमारे साथ जुड़े रहेंगे।

इस आयोजन में हिन्दी विभाग की सहायक प्राध्यापिका आदरणीय डॉ० प्रिया शर्मा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जिस प्रकार बड़ी से बड़ी इमारत को मजबूती प्रदान उसकी नींव करती है उसी प्रकार बड़ी से बड़ी संस्था/विश्वविद्यालय को ऊँचाई तक ले जाने के लिए उसकी नींव पुरातन छात्र हैं। इसलिए उन्हें अपने जड़ों के साथ न केवल जुड़े रहने की आवश्यकता है अपितु उन जड़ों को पोषित-पल्लवित और सिंचित करने की भी अनिवार्यता है। काफी सरल और सहजभाव से पुरातन छात्रों की महत्ता को एक कविता के माध्यम से उन्होंने समझाने का प्रयास भी किया।

आयोजन के अगले क्रम में हिन्दी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति जी ने शिक्षक और विद्यार्थी की महत्ता को बताते हुए कहा कि वह शिक्षक ही है जो अपने विद्यार्थी को सही मार्ग बताता है। उन्होंने आगे कहा कि एक विद्यार्थी और शोधार्थी के साथ शिक्षक का मानस पुत्र एवं पुत्री का सम्बन्ध होता है। इसलिए वह विद्यार्थी और शोधार्थी के सुख-दुःख में सहभागी होता है। आज जितने पुरातन छात्र हैं, उनकी कोई भी समस्याएँ और चुनौतियाँ होंगी, उसके समाधान के लिए हम सभी उनके साथ हैं तथा जितना हो सकेगा उतनी सहायता भी हम सभी करेंगे। उन्होंने पुरातन छात्रों की उपलब्धियों की सराहना करते हुए उन्हें संस्था के प्रति और अधिक निष्ठावान कैसे बनाया जा सकता है इसको केंद्र में रख कर चर्चा की। साथ ही साथ पुरातन छात्रों को प्रेरित और आश्वस्त करते हुए यह भी कहा कि यह परिषद न केवल पुरातन छात्रों को एक मंच प्रदान करने का प्रयास है बल्कि उनकी समस्याओं, चुनौतियों और कठिनाइयों का निराकरण करते हुए विश्वविद्यालय को सफल और विकसित बनाने का भी प्रयास है।

इस क्रम में हिन्दी विभाग की सहायक प्राध्यापिका डॉ. प्रीति सिंह ने भारत की सनातन संकल्पना 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को उद्धृत करते हुए कहा कि जब तक हम सभी एक साथ जुड़ेंगे नहीं तब तक हम सभी अपनी संस्कृति और ज्ञान का विस्तार नहीं कर सकते हैं। इसलिए आप सभी को एक साथ जुड़कर अपने ज्ञान, बुद्धि एवं विवेक द्वारा इस विश्वविद्यालय को क्या योगदान दे सकते हैं? इस पर भी ध्यान दें और नये छात्रों का भी मार्गदर्शन करें।

इस आयोजन में आदरणीय डॉ. चन्द्रकांत सिंह जी ने अपने उद्बोधन में सभी पूर्व छात्रों की महत्ता एवं उनकी आवश्यकता को बताते हुए इस मंच के दूरगामी प्रभावों से अवगत करवाया। उनका मानना था कि सार्थक यात्रा वह है, जिसमें व्यष्टि से समष्टि के भाव कहीं अधिक गहरे न केवल बसते हों अपितु देश, राष्ट्र और समाज को भी रूपायित करते हो। साथ ही साथ उन्होंने इस ओर भी संकेत किया कि यह मंच एक ओर पुरातन छात्रों को एकीकृत करके उनके अनुभवों और कार्यों से सीख लेने का माध्यम बनेगा वहीं दूसरी ओर नूतन छात्रों का प्रेरक और मार्गदर्शक भी सिद्ध होगा।

इस आयोजन में पूर्व विद्यार्थियों ने भी अपने छात्र जीवन के अनुभव साझा किए। डॉ. पूनम शर्मा, डॉ. आशा आदि ने विभाग से संबंधित अपने मार्मिक संस्मरण साझा किए। इस आयोजन के अंत में पुरातन छात्र परिषद कार्यकारिणी का भी गठन किया गया, जो अग्रलिखित हैं-

समन्वयक- डॉ. प्रिया शर्मा (सहायक आचार्या, हिंदी विभाग), सह समन्वयक – डॉ. चंद्रकांत सिंह (सहायक आचार्य, हिंदी विभाग), सदस्य- डॉ. ओम प्रकाश प्रजापति (सहायक आचार्य, हिंदी विभाग), डॉ. प्रीति सिंह (सहायक आचार्या, हिंदी विभाग), अध्यक्ष- डॉ. पूनम शर्मा (पूर्व शोधार्थी, हिंदी विभाग), उपाध्यक्ष- डॉ. आशा (पूर्व शोधार्थी,हिंदी विभाग), सचिव- चमन (पूर्व विद्यार्थी, हिंदी विभाग), सह-सचिव- भरत (पूर्व विद्यार्थी, हिंदी विभाग), कोषाध्यक्ष- धर्म चंद (पूर्व विद्यार्थी, हिंदी विभाग)। इस आयोजन का संयोजन एवं संचालन हिंदी विभाग के प्रभारी आदरणीय डॉ. चंद्रकांत सिंह जी ने किया।

केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के दो शोधार्थियों का अध्यापक परीक्षा में चयन

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला बेहतर शिक्षा के सपनों को साकार कर रहा है। यदि बात हिन्दी विभाग की करें तो दो शोधार्थियों तेजा सिंह और छविन्दर कुमार का चयन हिमाचल प्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग में बतौर अध्यापक पद पर हुआ है। शोधार्थी तेजा सिंह ने हिमाचल प्रदेश राज्य लोक सेवा आयोग, शिमला द्वारा आयोजित स्कूल प्रवक्ता परीक्षा उत्तीर्ण की है। उन्होंने दिसंबर के अंत में ही राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला, बांदल में बतौर प्रवक्ता हिन्दी पद पर कार्यभार ग्रहण कर लिया है। दूसरे शोधार्थी छविन्दर कुमार ने हिमाचल प्रदेश कर्मचारी चयन आयोग हमीरपुर द्वारा आयोजित भाषा अध्यापक परीक्षा उत्तीर्ण की है। विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग इन दोनों की सफलता से उत्साहित है। कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने अध्यापक बनने पर दोनों शोधार्थियों को बधाईयाँ एवं शुभकामनाएँ देकर अनुग्रहित किया। गौरतलब है कि दोनों शोधार्थी तेजा सिंह और छविन्दर कुमार हिन्दी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. ओम प्रकाश प्रजापति के निर्देशन में शोध कार्य कर रहे हैं।

शिक्षा में भारतीय परम्पराओं का समावेश

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला में विश्वविद्यालय स्थापना दिवस के उपलक्ष्य पर भारतीय शिक्षण मण्डल के सम्पर्क विभाग एवं हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय ई- व्याख्यान का आयोजन किया गया। इसमें देश भर के विद्वानों ने सहभागिता की। इस ई-व्याख्यान का विषय " शिक्षा में भारतीय परम्पराओं का समावेश" था। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में माननीय शंकरानन्द जी (अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री, भारतीय शिक्षण मण्डल) की गरिमामयी उपस्थिति रही। इनके अलावा व्याख्यान के अध्यक्ष हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के यशस्वी कुलपति प्रोफेसर सत प्रकाश बंसल जी और प्रोफेसर कुलभूषण चंदेल (अध्यक्ष भारतीय शिक्षण मण्डल , हिमाचल प्रान्त) विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम के संयोजक हिन्दी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ ओमप्रकाश प्रजापति ने मंच संचालन का दायित्व बखूबी निभाया। कार्यक्रम का प्रारंभ संस्कृत विभाग के शिक्षार्थियों द्वारा मंत्रोच्चारण के साथ किया गया।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम भारतीय शिक्षण मंडल, हिमाचल प्रांत के माननीय अध्यक्ष प्रोफेसर कुलभूषण चंदेल ने अपने व्याख्यान में भारतीय शिक्षण मण्डल के कार्यों पर संक्षेप में प्रकाश डाला और बीज वक्ता माननीय शंकरानन्द जी का परिचय और उनके शिक्षा के क्षेत्र में योगदान को भी उद्घाटित किया ।

शंकरानन्द जी ने अपने व्याख्यान में कहा कि किस प्रकार से आधुनिक शिक्षा में भारतीय परम्पराओं का समावेश किया जा सकता है। उन्होंने सर्वप्रथम परम्परा क्या है? इसे जानना कितना आवश्यक है? जैसे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य समष्टि हित होना चाहिए न कि स्व हित। समष्टि हित के लिए हमें संगठित होने की आवश्यकता होती है और हर मनुष्य को समष्टि हितार्थ के लिए कुछ न कुछ करते रहना चाहिए। यदि समष्टि हितार्थ मनुष्य दूरदर्शितापूर्ण कार्य करे तो वह अधिक समय तक टिकता है। श्री शंकरानन्द जी ने प्रयोग और परम्परा पर विशेष बल देते हुए कहा कि जो इस प्रयोजन से कार्य करते हैं वही कार्य समाज के हित में होता है और उसी से समाज का कल्याण होता है।

शिक्षा में भारतीय परम्पराओं का समावेश कैसे हो? कैसे शिक्षार्थी भारत के गौरवशाली इतिहास को जानें? आदि जैसे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर भी उन्होंने विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला और कहा कि प्राचीन शिक्षा पद्धति छात्र प्रधान थी इस कारण उस समय भारत विश्व गुरु था। आधुनिक युग में छात्र हितार्थ परम्पराओं का गहन अध्ययन तथा परम्पराओं और युग बोध को जानना एवं लागू करना अति आवश्यक है। यदि हमें यह ज्ञान नहीं होगा तो इससे हमारे समाज का अहित होगा। शिक्षा छात्र केन्द्रित होने पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान शिक्षा का स्वरूप छात्र केन्द्रित न होकर शिक्षक केन्द्रित है। उन्होंने कहा कि शिक्षा और विषय चयन छात्र रूचि के अनुसार ही होना चाहिए तथा मनुष्य के अन्दर जो दिव्यता है उस दिव्यता को मन, वचन और क्रमानुसार उसे व्यवहार में उतारना ही वास्तव में शिक्षा है। शिक्षक और छात्र सदैव साथ रहे इसलिए तो शिष्य को अंतेवासी कहा गया है। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि शिक्षा में समय सारणी जैसे सिद्धांत नहीं होने चाहिए चूँकि जब सीखने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है तो वहाँ समय का बंधन नहीं होना चाहिए। जिस शिक्षा में आत्मीयता, अनुशासन, समर्पण और श्रद्धा का भाव

हो, निरंतर सीखने का अवसर प्राप्त होता रहे, वही वास्तव में शिक्षा की परिभाषा है। उन्होंने आधुनिक शिक्षा जगत से जुड़े लोगों से आह्वान किया कि शिक्षा व्यवस्था को छात्र केन्द्रित बनाने में अपना योगदान दें और वही शिक्षा इस देश की तस्वीर और तकदीर को बदलने में सक्षम है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष हिमाचल केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सत प्रकाश बंसल जी ने भी अपने व्याख्यान में आधुनिक शिक्षा में प्राचीन शिक्षा परम्पराओं का समावेश कैसे किया जा सकता है ? कैसे हम भारत के गौरवमयी इतिहास को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रख सकते हैं ? उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति में छात्र केन्द्रित शिक्षा पर बल दिया गया है और इसे लागू करने में शिक्षकों की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है, उन्हीं पर इसका क्रियान्वयन केन्द्रित है। कुल गुरु ने कहा कि प्रत्येक शिक्षक को पंद्रह-पंद्रह छात्रों के हितार्थ कार्य करना चाहिए और यह कार्य जरूरी नहीं कि कक्षा-कक्ष में ही हो बल्कि इसे कहीं पर भी आयोजित किया जा सकता है। शिक्षक ही समाज का निर्माता है इसलिए उसे अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभानी चाहिए। अपने उद्बोधन में उन्होंने आत्मनिर्भर भारत का भी जिक्र किया और कहा कि सर्वप्रथम भारत को शहरीकरण की तरह पलायन रोकने की सख्त जरूरत है। स्वामी विवेकानंद जी और उनका भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में योगदान पर भी उन्होंने प्रकाश डाला और कहा कि भारत पुनः विश्व गुरु बनने जा रहा है और बस उसके लिए आवश्यकता है आत्मनिर्भर भारत बनाने की।

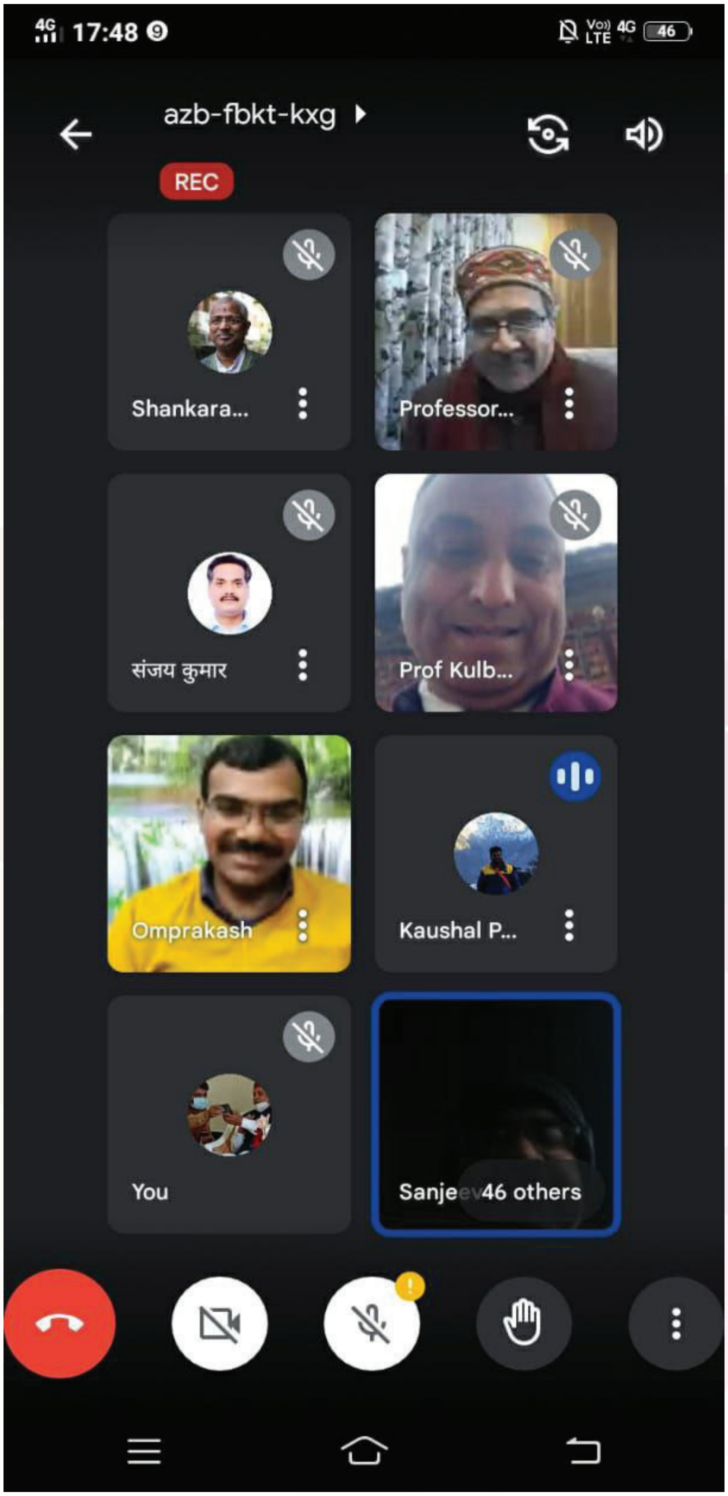

कार्यक्रम के अंत में विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉ. विशाल सूद जी ने समस्त अतिथि वक्ताओं, हिन्दी विभाग और कार्यक्रम में जुड़े शिक्षाविदों, शोधार्थियों एवं शिक्षार्थियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का समापन कौशल प्रताप सिंह जी के मंत्रोच्चारण से हुआ।

डॉ. ओम प्रकाश प्रजापति महाराष्ट्र सेट परीक्षा में आब्जर्वर नामित

हिन्दी विभाग, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के सहायक प्राध्यापक डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली (नेट ब्यूरो) द्वारा महाराष्ट्र राज्य पात्रता परीक्षा यानी सेट का आब्जर्वर बनाया गया है। गौरतलब है कि डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति उन चुनिंदा प्राध्यापकों में एक हैं जिन्हें इस परीक्षा को सफलतापूर्वक करवाने के लिए आब्जर्वर का दायित्व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की तरफ से सौंपा गया है। विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग अपने युवा प्राध्यापक को यह दायित्व मिलने से गौरवान्वित अनुभव कर रहा है। डॉ. प्रजापति ने कहा कि मुझे जो आब्जर्वर की जिम्मेदारी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सौंपी गई है, इसके लिए मैं आयोग का आभार व्यक्त करता हूँ और इसके साथ-साथ अपने विश्वविद्यालय परिवार का भी आभारी हूँ जो मुझे सदैव अध्यापन कार्य के अलावा इस तरह के नये और उत्तरदायित्व पूर्ण करने के लिए अभिप्रेरित करता रहता है।

डॉ. ओम प्रकाश प्रजापति बने महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा में विद्या परिषद सदस्य

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला में हिन्दी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति को महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा में विद्यापरिषद का सदस्य मनोनीत किया गया है। बताते चलें कि इस परिषद में भूतपूर्व विद्यार्थियों को विद्या परिषद के रूप में दो वर्ष के लिए नियुक्त किया जाता है। विश्वविद्यालय की आधारभूत संरचना, शैक्षणिक क्रियाकलापों से सम्बन्धित एवं अन्य सुचारू गतिविधियों को क्रियान्वित करने की जिम्मेदारी इस परिषद की रहती है या यूँ कहें कि विश्वविद्यालय की तस्वीर और तकदीर को बदलने में इस तरह की परिषदों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

‘मध्यकालीन कविता अवधारणा और स्वरूप’ पुस्तक का विमोचन

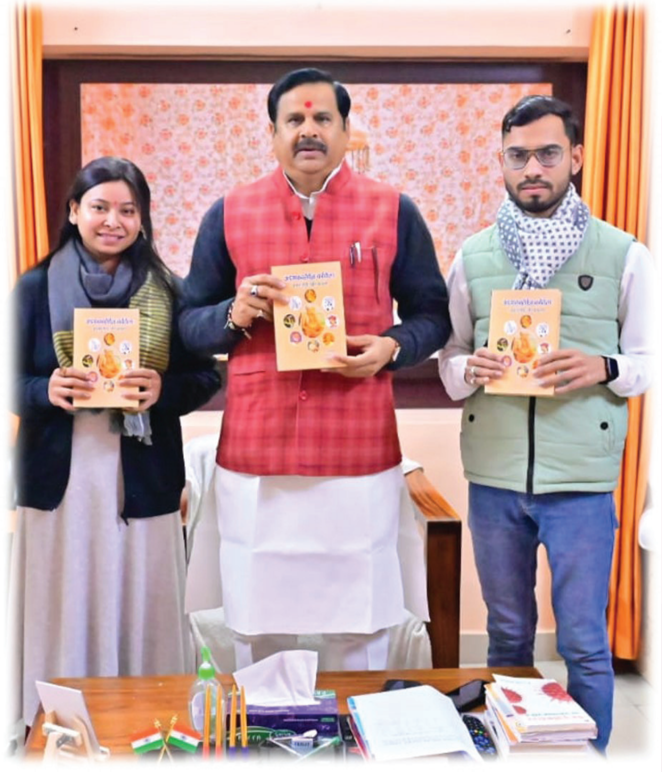

डॉ. प्रीति सिंह द्वारा ‘मध्यकालीन कविता : अवधारणा और स्वरूप’ विषय पर पुस्तक का संपादन किया गया। पुस्तक में देश के विभिन्न भागों से महत्वपूर्ण लेख सम्मिलित किए गए हैं। इस पुस्तक से भक्तिकाल और रीतिकाल से जुड़े कई प्रश्नों का सकारात्मक उत्तर मिलता है। उक्त पुस्तक की भूमिका डॉ. कन्हैया सिंह (पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान) द्वारा लिखी गई। पुस्तक के फ्लैप कवर की भूमिका पद्मश्री प्राप्त हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति प्रोफेसर हरमहेंद्र सिंह बेदी द्वारा लिखी गई है। पुस्तक का विमोचन 23 जनवरी 2022 को उत्तर प्रदेश कैबिनेट जल शक्ति मंत्री, डॉ. महेंद्र सिंह के करकमलों द्वारा संपन्न हुआ। पुस्तक भक्तिकाल एवं रीतिकाल से संबंधित अवधारणा, स्वरूप एवं अत्यंत महत्वपूर्ण विषयों को सँजोए हुए है।

डॉ. प्रीति सिंह को नियुक्त किया निर्णायक का मंडल संयोजक

नेहरू युवा केंद्र, धर्मशाला के तत्वावधान में आयोजित भाषण प्रतियोगिता ‘देश भक्ति और राष्ट्र’ विषय पर 06 दिसंबर 2021 को भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गयी। जिसमें हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय की ओर से प्रतियोगिता में प्रतिभागिता के लिए निर्णायक मंडल की संयोजिका डॉ. प्रीति सिंह को नियुक्त किया गया। 07 दिसम्बर 2021 को नेहरू युवा केंद्र द्वारा जिलास्तर पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसके निर्णायक मंडल में डॉ. प्रीति सिंह को सम्मिलित किया गया साथ ही देहरा कॉलेज एवं राजकीय महाविद्यालय से भी निर्णायक उपस्थित रहे।

वैश्विक भाषा के रूप में हिंदी की भूमिका विषय पर ई-संगोष्ठी

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग और राजभाषा अनुभाग की ओर से 'वैश्विक भाषा के रूप में हिंदी की भूमिका' विषय पर ई-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। ई-संगोष्ठी में बतौर अध्यक्ष वि.वि. के माननीय कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल जी मौजूद रहे। वहीं आमंत्रित वक्ताओं में अटल बिहारी बाजपेयी वि.वि. के पूर्व कुलपति मोहल लाल छीपा जी और हैम्बर्ग वि.वि. के संकाय सदस्य डॉ. राम प्रसाद भट्ट जी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वि.वि. के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल जी ने कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु हिंदी विभाग को बधाई दी।

अपने अध्यक्षीय भाषण में माननीय कुलपति महोदय ने कहा कि वैश्विक भाषा के रूप में हिंदी की भूमिका को लेकर एक एजेंडा बनना चाहिए। उन्होंने वि.वि. के स्तर पर समीक्षा करते हुए कहा कि हमें आत्म-मंथन करना चाहिए कि हमने विश्वविद्यालय के स्तर पर कितना हिंदी को लागू किया है और कितना कार्य किया जाना शेष है। आज हम विश्व हिंदी दिवस मना रहे हैं। हमारे वि.वि में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लगभग 60 से 70 प्रतिशत लागू किया गया है। हिमाचल की भाषा के शब्दों के अर्थ न बदलें इसके लिए विशेषज्ञों की टीम गठित की गई है। इसके लिए एम.ओ.यू साइन किया जाएगा।

कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय प्रयासरत है कि अगले सत्र में कम से कम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस अभियान की शुरुआत हो और विदेशों से विद्यार्थी विश्वविद्यालय में अध्ययन करने आएँ। उन्होंने सभी विभागों से अनुरोध किया कि वे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कुछ ऐसे विश्वविद्यालय को चुने जहाँ पर 15 % तक हिंदी पढ़ाई जा सके। पहली बार राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत देश को अपनी भाषा में शिक्षा देने का प्रयास किया गया है। हालाँकि बहुत काम होने के बाद भी हम काफी पीछे हैं। रोजगार के लिए अभी भी एक ही भाषा को महत्व दिया जाता है, यह सही नहीं है। यह व्यक्ति को अवसाद ग्रस्त कर रहा है। भाषा देश की अभिव्यक्ति का माध्यम है। विश्व में हिंदी करीब करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है।

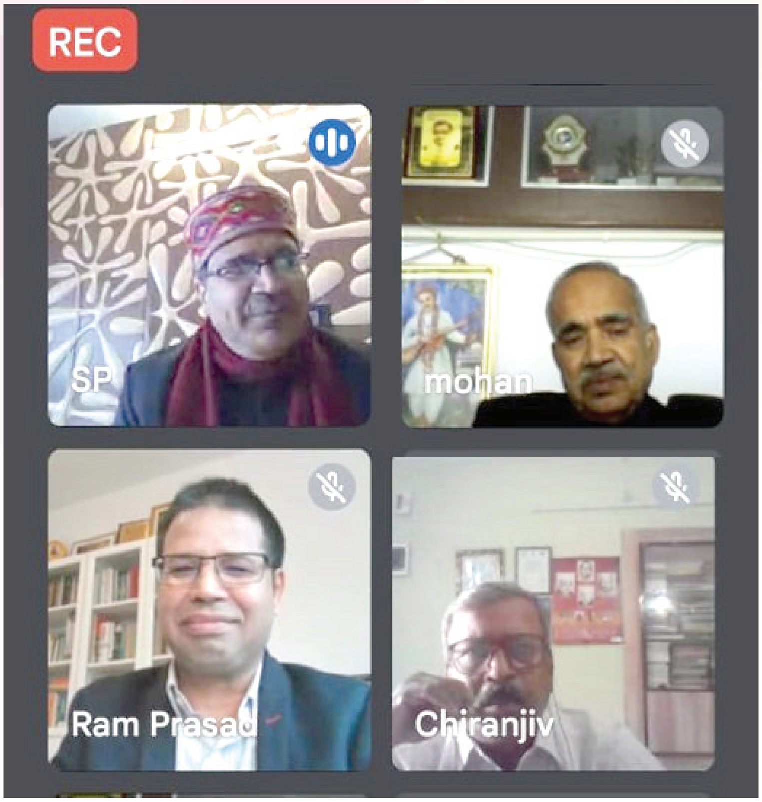

इससे पहले आमंत्रित वक्ताओं में डॉ. मोहन लाल छीपा जी ने हिंदी की उपादेयता को सभी वक्ताओं के समक्ष रखा। उन्होंने कहा कि सांख्यिकी की दृष्टि से हिंदी बोलने वालों की संख्या अधिक है। निर्विवाद रूप से हिंदी श्रेष्ठ भाषा है इसे अधिकारिक रूप से अपनाना होगा। वहीं हैम्बर्ग विश्वविद्यालय जर्मनी के संकाय सदस्य डॉ. राम प्रसाद भट्ट जी ने कहा कि जर्मनी भारत विद्या केंद्र के रूप में विद्यमान है। विश्व के कई देशों में हिंदी अपने प्रभुत्व वाले स्थान पर है। कई दुर्लभ पांडुलिपियों के बारे में उन्होंने जानकारी दी। इंडोलाजी और जर्मनी में सौ साल से हिंदी पढ़ाई जा रही है इसके बारे में जानकारी दी। इस मौके पर धन्यवाद ज्ञापन हेतु डॉ. पाल जी ने ई संगोष्ठी में उपस्थित समस्त प्राध्यापकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की।

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

चरैवेति चरैवेति चरैवेति

हिंदी विभाग

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, शैक्षणिक खंड, धौलाधार परिसर-एक,

संरक्षक

प्रो. (डॉ.) सत प्रकाश बंसल
माननीय कुलपति
हि.प्र.कें.वि.वि, धर्मशाला

मार्गदर्शक

डॉ. एन. आर. गोपाल
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग

संपादक

डॉ. ओम प्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

सह - संपादक

डॉ. चंद्रकांत सिंह
डॉ. प्रिया शर्मा
डॉ. प्रीति सिंह

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय,
शैक्षणिक खंड धर्मशाला, जिला - काँगड़ा, (हि.प्र.) 176215